[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 827 G

Unique Paper Code : 2052202301

Name of the Paper : Hindi Katha Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) राजा ने सबसे सहमत होकर आज्ञा दी। 'प्राणदण्ड!' मधुलिका बुलाई गई। वह पगली-सी आकर खड़ी हो गई। कोशल नरेश ने पूछा- 'मधुलिका, तुझे जो पुरस्कार लेना हो, मांग।' वह चुप रही।

राजा ने कहा- 'मेरी निज की जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूँ। मधुलिका ने एक बार बन्दी अरुण की ओर देखा।

P.T.O.

उसने कहा–' मुझे कुछ नहीं चाहिए। अरुण हँस पड़ा। राजा ने कहा– 'नहीं, मैं तुझे अवश्य दूँगा। माँग ले।' तो मुझे भी प्राणदंड मिले। कहती हुई वह बन्दी अरुण के पास जा खड़ी हुई।

अथवा

"ऐसी होली–
ऐसी होली खेलो लाल! ऐसी होली–
जन्मभूमि का दुख हरने को माता का मंगल करने को।
भरने को पीड़ित हृदयों में, सुख के झर–झर–झर झरने को।
ले कर में कराल करवाल,
ऐसी होली–
ऐसी होली खेलो, लाल!"

(ख) खाने के बाद सहसा बिलाव जोर से गुस्से से चीखा और उछलकर गोद से बाहर जा कूदा। गुस्से से गुर्राने लगा। धीरे–धीरे गुस्से का स्वर दर्द के स्वर में परिणत हुआ, फिर एक करुण रिरियाहट में, एक दुर्बल चीख में, एक बुझती हुई–सी कराह में, फिर एक सहसा चुप हो जाने वाली लंबी साँस में। देविंदरलाल जी की आँखें निःस्पंद यह सब देखती रहीं।

आजादी भाईचारा। देश–राष्ट्र ....

एक ने कहा कि हम जोर करके रखेंगे और रक्षा करेंगे, पर घर से निकाल दिया। दूसरे ने आश्रय दिया, और विष दिया। और साथ में चेतावनी की विष दिया जा रहा है।

अथवा

गजाधर बाबू ने आहत विस्मित दृष्टि से पत्नी को देखा। उनसे अपनी हैसियत छिपी न थी। उनकी पत्नी तंगी का अनुभव कर उसका उल्लेख करतीं। यह स्वाभाविक था लेकिन उनमें सहानुभूति का पूर्ण अभाव गजाधर बाबू को बहुत खटका। उनसे यदि राय-बात की जाती कि प्रबंध कैसे हो तो उन्हें चिन्ता कम संतोष अधिक होता लेकिन उनसे तो केवल शिकायत की जाती थी जैसे परिवार की सब परेशानियों के लिए, वही जिम्मेदार थे।

(ग) जालपा के लिए इन चीजों में लेशमात्र भी आकर्षण न था। हां, वह वर को एक आंख देखना चाहती थी, वह भी सबसे छिपाकर, पर उस भीड़-भाड़ में ऐसा अवसर कहां। द्वारचार के समय उसकी सखियां उसे छत पर खींच लें गईं और उसने रमानाथ को देखा। उसका सारा विराग, भारी उदासीनता, सारी मनोव्यथा मानो छू-मंतर हो गई थी। मुंह पर हर्ष की लालिमा छा गई। अनुराग स्फूर्ति का भंडार है।

अथवा

इस समय रमा की आंखों से आंसू तो न निकलते थे, पर उसका एक-एक रोआं रो रहा था। जालपा से अपनी असली हालत छिपाकर उसने कितनी भारी भूल की! वह समझदार औरत है, अगर उसे मालूम हो जाता कि मेरे घर में भूंजी भांग भी नहीं है, तो वह मुझे कभी उधार गहने न लेने देती। उसने तो कभी

अपने मुंह से कुछ नहीं कहा। मैं ही अपनी शान जमाने के लिए मरा जा रहा था। इतना बड़ा बोझ सिर पर लेकर भी मैंने क्यों किफायत से काम नहीं लिया?

2. कहानी के स्वरूप को समझाते हुए उसकी संरचना की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'उपन्यास' से आप क्या समझते हैं? उसकी संरचना पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'मधुलिका' का चरित्र-चित्रण करते हुए पुरस्कार कहानी में निहित उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'ऐसी होली खेलों, लाल' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

4. 'शरणदाता' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

अथवा

'वापसी' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

5. 'गबन' उपन्यास मध्यवर्गीय दिखावटी प्रवृत्ति की समस्या को चित्रित करता है। कथन की पुष्टि सोदाहरण कीजिए।

अथवा

'रमानाथ' का चरित्र-चित्रण लिखिए। (15)

(3000)